46-8

कम

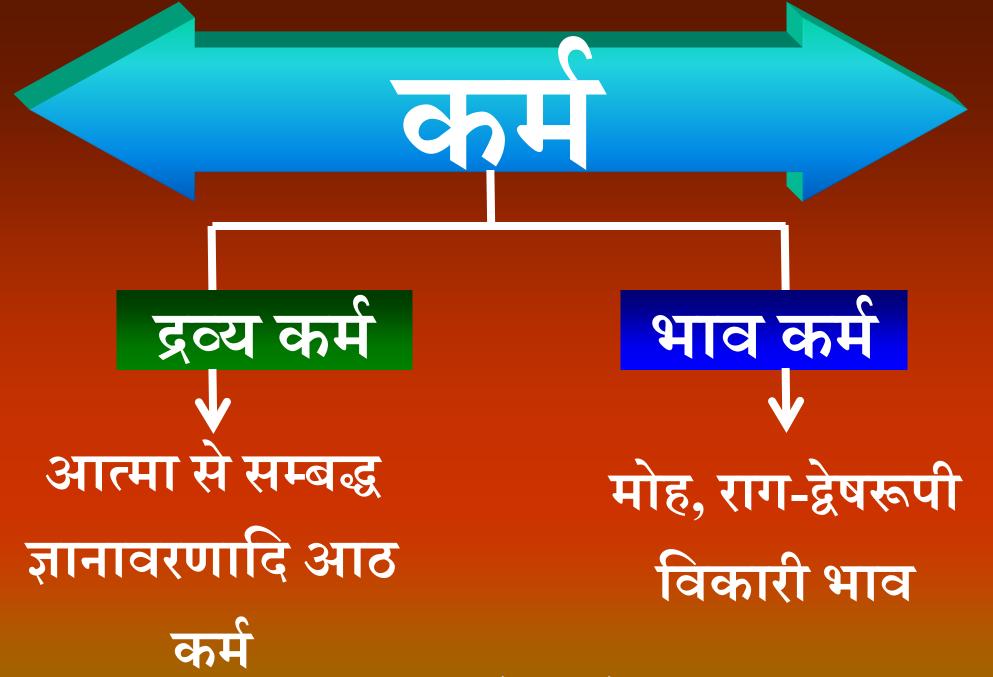
प्रकाश छाबड़ा, यंग जैन स्टडी ग्रुप, इन्दौर



99260-40137

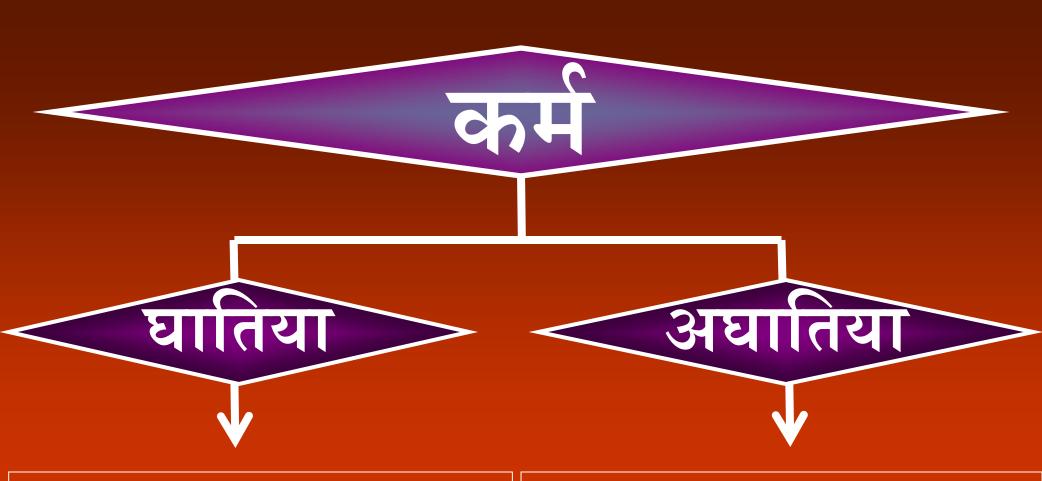
다 다 무

जो अपनी आत्मा के असली स्वभाव को प्रकट न होने दे



द्रव्य और भाव कर्म में अंतर

प्रव्य कर्म भाव कर्म नष्ट होने पर स्वयं जीव से संबंध छूट जाता है होता है



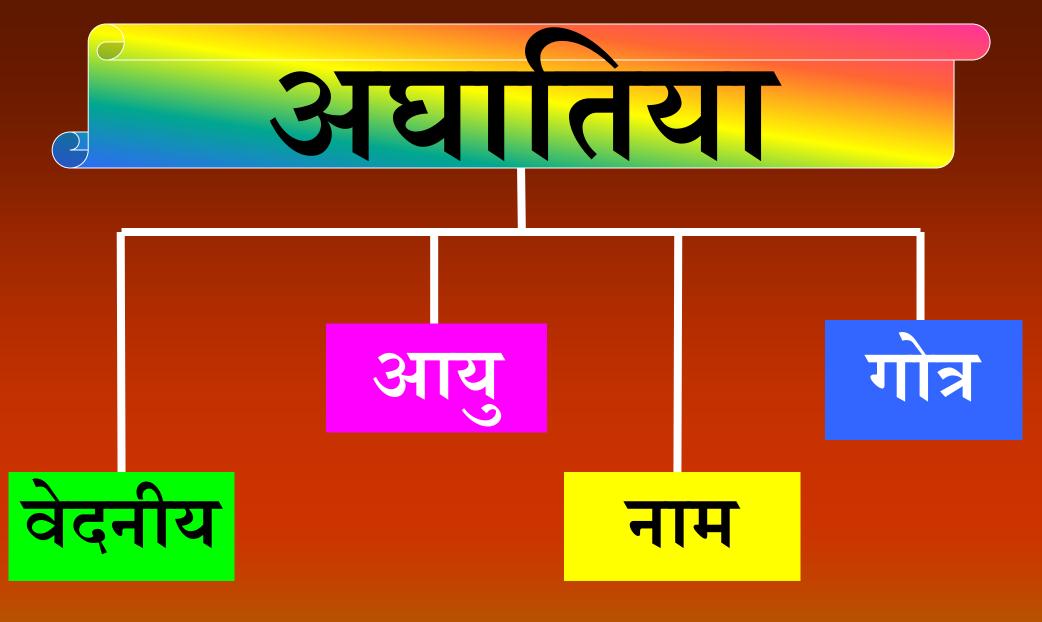
स्वभाव का घात होता

बाह्य सामग्री का संबंध बनता



दर्शनावरण

अंतराय





जो आत्मा के ज्ञान गुण को घाते (अर्थात् प्रकट न होने दे)

दश्नावरण कर्म

जो आत्मा के दर्शन गुण को घाते (अर्थात् प्रकट न होने दे)



जो आत्मा के सम्यक्तव और चारित्र गुण को घाते (अर्थात् विपरीत करे)

मोहनीय कर्म के भेद

दर्शन मोहनीय

3

चारित्र मोहनीय

25



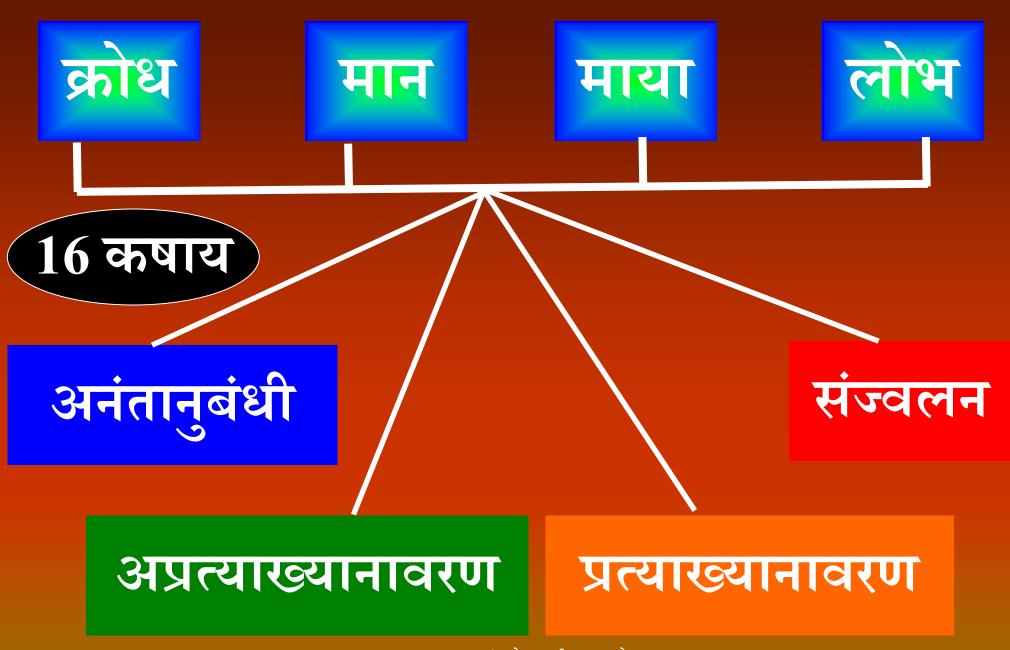
जो आत्मा के सम्यक्तव गुण को घाते



जो आत्मा के चारित्र गुण को

घाते

चारित्र मोहनीय के भेद

नाकषाय

*****हास्य

*****रित

****अरित**

****शोक**

***भय**

****जुगुप्सा**

*स्त्री वेद

****पुरुष वेद**

******नपुंसक वेद



जो दानादिक में विघ्न डाले



जिस कर्म के फल से जीव को

आकुलता हो

वेदनीय कर्म के भेद

असाता साता दुःखरूप अनुभव सुखरूप अनुभव अनुकूल सामग्री की प्रतिकूल सामग्री की



जो कर्म आत्मा को नारक, तिर्यंच, मनुष्य और देव के शरीर में रोके

रखे



तियंच देव नरक मनुष्य तियंच नारकी मन्ष्य के शरीर में रोके रखें



जो शरीरादिक बनावे

नाम कर्म के भेद

शुभ

सुंदर शरीरादि बनावे

अशुभ

कुरुप शरीरादि बनावे

नाम कर्म की कुल 93प्रकृतियाँ हैं



जो जीव को ऊँच-नीच कुल में उत्पन्न करावे

गोत्र कर्म के भेद

जेटा े लोक पूजित कुल में जन्म हो

नीच जन्म हो

कमं के उदाहरण

मूल कर्म	उदाहरण
ज्ञानावरण	मूर्ति पर डला कपड़ा
दर्शनावरण	पहरेदार
मोहनीय	मदिरा
अंतराय	खजांची
आयु	बेड़ी
नाम	चित्रकार
गोत्र	कुम्हार
वेदनीय	शहद लपेटी तलवार की धार

क्या कर्म आत्मा को दुःखी करते हैं?

आत्मा स्वयं को भूलकर मोह, राग-द्वेषरूप परिणमन करता है, तो दु:खी होता है

कर्म का उदय उस समय निमित्त होता है

कर्म जबरदस्ती आत्मा को विकार नहीं कराते हैं

कर्म बंध चक्र

नवीन द्रव्य कर्मबँध होता पूर्व बँधे द्रव्य कर्म का उदय (फल देना) यहाँ जीव कर्म के मंद उदय में पुरुषार्थ से इस चक्र को रोक सकता है

जीव भाव कर्म करता (मोह रागदि)

पुनः